एक डॉक्यूमेंट्री बनाने जा रही है, उन्हें वाराणसी को जानने वाले चार स्थानीय लोगों की ज़रूरत है। मैं डॉक्यूमेंट्री में काम करने के लिए सहर्ष तैयार हो गया; मेरे साथ बीएचयू के तीन अन्य मित्र सुकेश लोहार, सुनील और धर्मेन्द्र भी तैयार हो गए। तब फिर एक दिन बीएचयू में मेरे शोध निर्देशक प्रोफेसर राजकुमार और संजय सर हम चारों को आईजीएनसीए के वाराणसी स्थित ऑफ़िस ले गए। वहाँ पर हमारी बातचीत हुई, फिर हम चारों डॉक्यूमेंट्री में काम करने के लिए रख लिए गए। हम चारों ने इस डॉक्यूमेंट्री में फील्ड रिसर्च असिस्टेंट के रूप में काम किया। एक महीने तक डॉक्यूमेंट्री में काम करने के दौरान मैंने बहुत कुछ सीखा। हम दोपहर में करीब ढाई तीन बजे तक रामलीला की जगह पर पहुँच जाते और कई बार रात के साढ़े दस ग्यारह बजे तक अपने घर लौटते। इस दौरान विविध भारती के कार्यक्रम अपने तय समय पर आते रहते, मैं कार्यक्रम नहीं सुन पाता, लेकिन मैं अपने मोबाइल पर विविध भारती ऑन कर उसे रिकॉर्डिंग मोड पर डाल देता। मैं फील्ड रिसर्च असिस्टेंट के रूप में काम करता रहता और मेरे मोबाइल पर मेरा पसंदीदा कार्यक्रम रिकॉर्ड होता रहता। मैं बाद में अपनी सुविधा के अनुसार उन कार्यक्रमों को सुन लेता।

बीएचयू के मुख्य द्वार के पास स्थित बाज़ार को लंका के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर कई दुकानें हैं। शाम में यहाँ पर बीएचयू के विद्यार्थी जुटते हैं; चाय, नाश्ता करते हैं, गप्पे हाँकते हैं; बनारस की भाषा में हम इसे लंकेटिंग कहते हैं, तो शाम में मैं भी यहाँ पर अपने मित्रों राजीव रंजन प्रसाद, अरविंद, अशोक सिंह यादव, सर्वेश, राजेश, सुकेश, लक्ष्मण इत्यादि के साथ लंकेटिंग के लिए जुटता था। बुधवार की शाम 7:45-8:00 बजे तक इनसे मिलिए; शनिवार की शाम 7:00-7:45 और 7:45-8:00 बजे तक क्रमशः विशेष जयमाला और जिज्ञासा कार्यक्रम प्रसारित होते हैं- मैं इन्हें सुनना पसंद करता हूँ। इसी तरह हर रोज रात में 8:00-8:15 और 9:00-9:30 तक क्रमशः हवा महल और हिट सुपरहिट कार्यक्रम प्रसारित होते हैं- मैं कभी कभी इन्हें भी सुनता हूँ। मैं पहले से तय कर लेता कि आज इन्हें सुनना है या नहीं। तय करने के बाद, मैं पहले तो इस बात की कोशिश करता कि उस समय घर से बाहर न निकलना पड़े, लेकिन अगर कभी मित्रों का फ़ोन आ गया कि आज लंकेटिंग करना है, तो फिर मैं समय पर अपने मित्रों के समक्ष उपस्थित होता; अपने मोबाइल को रिकॉर्डिंग मोड पर लगा देता और उनके साथ चाय और गप्प में शरीक हो जाता।

मैं कई बार अपने गुरु प्रोफेसर राजकुमार से शाम में मिलने उनके घर जाता। अगर उस समय मेरी विविध भारती के कार्यक्रम का समय होता तो मैं वहाँ भी यही करता, यानी अपने मोबाइल को रिकॉर्डिंग मोड में डाल देता और सर से डिसकस करता रहता।

मोबाइल पर विविध भारती सुनने में बहुत सहूलियत थी, दिक्कत थी तो सिर्फ़ एक कि अगर उस समय किसी का फ़ोन आ जाता तो मोबाइल की घंटी बजने लगती और उसमें विविध भारती बजना बंद हो जाता। मेरे मित्र राजीव रंजन प्रसाद का कई बार इसी समय फोन आता, तब मैंने उससे कहा कि रात में 9:00-10:00 और दिन में 4:00-5:00 बजे तक मैं मोबाइल पर विविध भारती सुनता हूँ , इसलिए कृपया करके इस समय फोन मत करना।

वर्ष 2015 में मेरी पीएच.डी. की थीसिस जमा हो गई और 2016 में अंतिम रूप से पीएच.डी. की मौखिक परीक्षा हो गई। मैंने 26 मार्च, 2016 से वाराणसी के ही एक प्राइवेट स्कूल में प्राथमिक शिक्षक के रूप में काम करना शुरु किया। मुझे स्कूल सुबह सात बजे तक पहुँच जाना होता था। विविध भारती पर सुबह 6:00-6:30 तक 'तेरे सुर और मेरे गीत' और 7:00-7:30 तक 'भूले बिसरे गीत' प्रसारित होते हैं। मैं इन दोनों कार्यक्रमों को सुनना पसंद करता हूँ , लेकिन सुबह सुबह स्कूल जाने के कारण इन्हें सुन नहीं पा रहा था; तब मैंने उपाय लगा कर इन्हें सुनना शुरू किया। मैं इन्हें मोबाइल पर रिकॉर्ड कर लेता और फिर बाद में सुन लेता। मैं अपने मोबाइल को रिकॉर्डिंग मोड में डालकर घर से निकलता, स्कूल पहुँचते पहुँचते 'तेरे सुर और मेरे गीत' कार्यक्रम रिकॉर्ड हो जाता। इसके बाद मैं असेम्बली ग्राउंड में रहता या फिर अपने स्टॉफ़ रूम में जहाँ पर मेरी जेब में रखे मोबाइल में 'भूले बिसरे गीत' रिकॉर्ड होता रहता और मैं अपना काम भी करता रहता। मैंने उस स्कूल में एक वर्ष तक काम किया। मैं इसके बाद एक अन्य प्राइवेट स्कूल में टीजीटी टीचर के रूप में नियुक्त हुआ। इस स्कूल का मालिक फ़ौज से सेवानिवृत्त था। उसने अपने स्कूल में मोबाइल पर प्रतिबंध लगा दिया था। कोई भी शिक्षक/शिक्षिका स्कूल के परिसर में मोबाइल पर बातचीत नहीं कर सकते थे। मैं यहाँ पर दसवीं कक्षा के बच्चों को पढ़ाता था, इनकी कक्षा लगभग साढ़े ग्यारह से शाम के साढ़े चार बजे तक लगती; मुझे स्कूल से निकलते निकलते लगभग साढ़े पाँच बज जाते। विविध भारती में हर रोज शाम में चार से पाँच बजे तक एक से एक बेहतरीन कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। बुधवार को आज के मेहमान कार्यक्रम आता है, जिसमें सिनेमा से जुड़े किसी व्यक्ति का साक्षात्कार प्रसारित होता है। इसी तरह शुक्रवार को विविधा प्रसारित होता है, इसमें विविधरंगी कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। ये दोनों मेरे बेहद पसंदीदा कार्यक्रम हैं। मुझे स्कूल से संबद्ध होने के बाद जब पता चला कि यहाँ मोबाइल पर प्रतिबंध है तो मैंने अपना सिर पीट लिया, ऊपर से तुर्रा यह कि यहाँ पर जगह जगह पर सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ था, यहाँ तक कि शिक्षकों के स्टाफ रूम में भी कैमरा लगा हुआ था यानी कि किसी की नज़रों में आए बिना मैं विविध भारती सुन नहीं सकता था। बस समझ लीजिए कि जालिम ज़माने ने विविध भारती और मेरे बीच उत्पन्न मोहब्बत के बीच फासला लाने का पुख्ता इंतज़ाम कर रखा था। इस पहरे में विविध भारती से आशिकी और भी गहरी हुई। मैंने एक उपाय निकाला, विद्यालय का मालिक हर जगह सीसीटीवी कैमरा लगा सकता है, लेकिन बाथरूम में तो नहीं लगा सकता न;